कानपुर, बुधवार, 1 अप्रैल, 2026
वर्षः 03, अंकः 82, पृष्ठः 8+4

सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com
Website: www.swarajindianews.com

स्वराज इंडिया

साप्ताहिक समाचार पत्र

इनसाइड बारूद के ढेर पर दुनिया!...>Pg12

किडनी रैकेट पर शिकंजा और कसा...>Pg03

मूल्यः ₹

सिस्टम से भरोसा टूटा या ईमानदारों को किनारे करने की साजिश?

यूपी ब्यूरोक्रेसी में इस्तीफों का 'विस्फोट'

आईएएस रिंकू सिंह राही के पिता का सरकार पर तीखा हमला

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में इन दिनों इस्तीफों और स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (वीआरएस) का सिलसिला एक बार फिर चर्चा का विषय बन गया है। हाल ही में आईएएस अधिकारी रिंकू सिंह के इस्तीफे ने प्रशासनिक गलियारों में कई सवाल खड़े कर दिए हैं। इससे पहले जनवरी माह में पीसीएस अधिकारी अलंकार अग्निहोत्री के इस्तीफे ने भी हलचल मचाई थी।

➪ वीआरएस लेने वाले आईएएस अधिकारियों की सूची भी चर्चा में

लगातार हो रहे इन इस्तीफों को लेकर शासन और प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह प्रवृत्ति न केवल प्रशासनिक स्थिरता को प्रभावित करती है, बल्कि शासन की कार्यप्रणाली पर भी असर डाल सकती है। प्रदेश में पिछले कुछ समय में कई आईएएस अधिकारियों द्वारा स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के मामले सामने आए हैं, जिनमें प्रमुख रूप से राजीव अग्रवाल, मोहम्मद मुस्तफा, आमोद कुमार, रेणुका कुमार, जूथिका पाटणकर, विकास गोठलवाल, विद्या भूषण, रिग्जिन सैम्फिल, राकेश वर्मा, रविंद्र पाल सिंह, अभिषेक सिंह और अनामिका सिंह शामिल हैं।

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

प्रशासनिक तंत्र पर पड़ सकता है असर

लगातार हो रहे इस्तीफों और वीआरएस के मामलों को लेकर यह सवाल उठ रहा है कि आखिर ऐसी परिस्थितियां क्यों बन रही हैं, जिनके चलते वरिष्ठ अधिकारी सेवा छोड़ने का निर्णय ले रहे हैं। हालांकि आधिकारिक स्तर पर इन इस्तीफों के कारणों को व्यक्तिगत बताया जा रहा है, लेकिन राजनीतिक और प्रशासनिक विश्लेषक इसे एक बड़े संकेत के रूप में देख रहे हैं। फिलहाल इन घटनाओं ने प्रदेश की प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर बहस तेज कर दी है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार इस प्रवृत्ति को किस तरह देखती है और क्या इसके पीछे के कारणों पर कोई स्पष्ट नीति या कदम सामने आते हैं।

'ईमानदारी की सजा या सिस्टम की विफलता?'

लखनऊ। आईएएस रिंकू सिंह राही के पिता श्योदान सिंह राही का बयान सामने आते ही प्रशासनिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है। उन्होंने साफ कहा कि सरकार को ईमानदारी का सम्मान करना चाहिए, न कि उसे ठुकराना चाहिए। उनका सवाल था कि अगर ईमानदार अधिकारियों को ही हाशिए पर रखा जाएगा तो सिस्टम में ईमानदारी बचेगी कैसे?। गौरतलब है कि रिंकू सिंह राही पिछले 8 माह से वेतन तो ले रहे थे, लेकिन उन्हें कोई जिम्मेदारी नहीं दी गई। इस स्थिति से नाराज होकर उन्होंने इस्तीफे की पेशकश कर दी थी। मामला अब शासन की कार्यशैली पर सीधे सवाल खड़े कर रहा है।

1500 की ईदी पर खून की होली

पत्नी-बच्चों की हत्या कर खुद फांसी पर झूला पति

स्वराज इंडिया ब्यूरो

मुजफ्फरनगर। एक छोटी सी रकम पर शुरू हुआ घरेलू विवाद इतना भयावह रूप ले लेगा, इसका अंदाजा किसी को नहीं था। सिविल लाइन थाना क्षेत्र के सरवट स्थित मदीना कॉलोनी में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत ने पूरे इलाके को दहला दिया। यहां एक युवक ने पहले अपनी पत्नी और दो मासूम बच्चों की बेरहमी से हत्या की, फिर खुद फांसी लगाकर जीवन समाप्त कर लिया।

मृतक इरशाद ने ईद के मौके पर अपनी बहन को 1500 रुपये ईदी के तौर पर दिए थे। इसी बात को लेकर उसकी पत्नी से कहासुनी शुरू हुई, जो धीरे-धीरे गंभीर विवाद में बदल गई। मोहल्ले के लोगों के मुताबिक, पिछले करीब 10 दिनों से घर में लगातार

➪ मामूली रकम पर 10 दिन से सुलग रहा था विवाद, आधी रात को बना कत्ल का प्लान
➪ पहले पत्नी और दो मासूमों का गला घोंटा, फिर खुद फंदे से लटक गया आरोपी

तनाव का माहौल था और आए दिन झगड़े की आवाजें सुनाई देती थीं।

बताया जा रहा है कि सोमवार रात यह विवाद चरम पर पहुंच गया। गुस्से में बेकाबू इरशाद ने पहले अपनी पत्नी को निशाना बनाया और फिर अपने ही दो मासूम बच्चों को मौत के घाट उतार दिया। वारदात को अंजाम देने के बाद उसने खुद भी फांसी

लगाकर आत्महत्या कर ली। पड़ोसियों ने मंगलवार तड़के करीब चार बजे तक घर से झगड़े और चीख-पुकार की आवाजें सुनीं। इसके बाद अचानक सब कुछ शांत हो गया, जिससे किसी अनहोनी की आशंका गहराने लगी। सुबह जब घर के अंदर का नजारा सामने आया, तो लोगों के होश उड़ गए चारों शव एक ही घर में पड़े मिले। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल की बारीकी से जांच शुरू की। सभी शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। शुरुआती जांच में घटना की वजह घरेलू कलह और आपसी विवाद को माना जा रहा है। वहीं, मृतका के परिजनों ने गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि इरशाद लंबे समय से उनकी बेटी के साथ मारपीट और उत्पीड़न करता था, जिससे घर में लगातार तनाव बना हुआ था। फिलहाल पुलिस मामले के हर पहलू की जांच कर रही है। क्या यह सिर्फ गुस्से का परिणाम था या इसके पीछे कोई और गहरी वजह भी छिपी है। लेकिन एक बात साफ है 1500 रुपये की मामूली रकम ने एक पूरे परिवार को हमेशा के लिए खत्म कर दिया।

कानपुर में संवेदनशील प्रतिष्ठानों की सुरक्षा पर मंथन, 31 संस्थानों ने साझा की रणनीति

» साइबर और ड्रोन हमलों से निपटने पर विशेष जोर, SOP तैयार

» मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। जनपद में सामरिक महत्व के प्रतिष्ठानों की सुरक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से मंगलवार को पुलिस आयुक्त कार्यालय सभागार में उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई। पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में शहर के 31 महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों के प्रबंधन व सुरक्षा अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक के दौरान अदानी डिफेंस, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (IOCL), भारत पेट्रोलियम (BPCL), कानपुर एयरपोर्ट, आईआईटी कानपुर और पनकी पावर प्लांट समेत अन्य प्रमुख संस्थानों ने अपनी सुरक्षा व्यवस्थाओं का विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। इसमें बाउंड्री वॉल, गेट एक्सेस कंट्रोल, ह्यूम बैरियर, टायर किलर, हाईड्रोलिक रोड ब्लॉकर, सीसीटीवी निगरानी प्रणाली, वॉच टावर, वीडियो एनालिटिक्स और फायर सेफ्टी मैकेनिज्म जैसे आधुनिक उपायों की जानकारी साझा की गई।

बैठक में बदलते सुरक्षा परिदृश्य को देखते हुए साइबर अटैक, ड्रोन अटैक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित खतरों पर विशेष चर्चा हुई। अधिकारियों ने इन संभावित चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी रणनीतियों पर विचार-विमर्श किया। साथ ही संविदा कर्मियों, श्रमिकों और अन्य कर्मचारियों के पुलिस वेरिफिकेशन को अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया गया।

पुलिस आयुक्त ने कहा कि कानपुर एक अत्यंत संवेदनशील औद्योगिक शहर है, जहां बड़ी आबादी के साथ-साथ सैन्य प्रतिष्ठान, पेट्रोलियम संस्थान, पावर ग्रिड और औद्योगिक इकाइयां स्थित हैं।

ऐसे में इन संस्थानों की सुरक्षा सुनिश्चित करना सर्वोच्च प्राथमिकता है।

बैठक में संयुक्त पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था, अपर पुलिस आयुक्त मुख्यालय/अपराध संकल्प शर्मा सहित विभिन्न जोन के अधिकारी मौजूद रहे। इसके अलावा CISF, DGR, SIS, अदानी समूह, पावर सेक्टर से जुड़े अधिकारी, इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) और स्पेशल ब्रांच के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। सभी एजेंसियों के बीच समन्वय बढ़ाने और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार करते हुए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) को अंतिम रूप दिया गया।

महिला बनकर ठग ने बिछाया जाल, इंजीनियर से 97 लाख की साइबर लूट

» 25 हजार पर नकली मुनाफा दिखाकर जीता भरोसा, 47 ट्रांजेक्शन में साफ की रकम

» साइबर थाना सक्रिय, खातों को फ्रीज कर नेटवर्क खंगालने में जुटी पुलिस

» मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म टेलीग्राम के जरिए साइबर ठगी का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक शातिर महिला ठग ने खुद को निवेश विशेषज्ञ बताकर एक इंजीनियर से 97,16,799 रुपये की बड़ी रकम उड़ा ली। पीड़ित विमलेश सोनी की तहरीर पर साइबर क्राइम थाने में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

जानकारी के अनुसार, नवंबर 2025 में पीड़ित का संपर्क केरल की पुचिका मेनन उर्फ युवी बतापमा नाम की महिला से हुआ। आरोपी ने खुद को रियल एस्टेट और फॉरेक्स ट्रेडिंग का जानकार बताते हुए मोटे मुनाफे का लालच दिया। शुरुआत में उसने महज 25 हजार रुपये निवेश कराकर 3,230 रुपये का फर्जी लाभ दिखाया, जिससे पीड़ित का भरोसा पूरी तरह जीत लिया।

इसके बाद आरोपी ने एक फर्जी वेबसाइट के माध्यम से पीड़ित का रजिस्ट्रेशन कराया और आधार व पैन जैसी संवेदनशील जानकारी हासिल कर ली। धीरे-धीरे निवेश का दायरा बढ़ाते हुए लगातार रकम जमा कराई जाती रही। 14 नवंबर 2025 से 27 फरवरी 2026 के बीच कुल 47 ट्रांजेक्शन के जरिए पीड़ित से करीब 97 लाख रुपये अलग-अलग खातों में ट्रांसफर करा लिए गए। इसमें उसकी पत्नी और दोस्त के खातों से भी रकम डलवाई गई।

जब पीड़ित को ठगी का अहसास हुआ तो उसने राष्ट्रीय साइबर अपराध पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए साइबर क्राइम थाना पुलिस सक्रिय हो गई है। साइबर थाना प्रभारी सतीश चंद्र यादव के मुताबिक, जिन बैंक खातों में रकम ट्रांसफर हुई है, उनकी जांच की जा रही है और कुछ संदिग्ध खातों को फ्रीज भी कर दिया गया है। पुलिस अब इस अंतरराज्यीय साइबर गिरोह के पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश करने में जुटी है।

15 वर्षों की सेवा के बाद मीतू निगम को भावभीनी विदाई

» मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर. बी.एन.एस.डी. शिक्षा निकेतन इंटर कॉलेज, बेनाझाबर में संगीत शिक्षिका मीतू निगम के 15 वर्ष के सेवाकाल पूर्ण होने पर सम्मानपूर्वक सेवानिवृत्ति समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय परिवार ने उन्हें भावभीनी विदाई दी।

समारोह के दौरान विद्यालय में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनके योगदान को याद किया गया।

प्रधानाचार्य बृजमोहन कुमार सिंह सहित सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने मीतू निगम को स्मृति चिन्ह एवं माल्यार्पण कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य ने कहा कि विद्यालय परिवार सदैव उनके साथ खड़ा रहेगा और आवश्यकता पड़ने पर हर संभव सहयोग प्रदान करेगा। कार्यक्रम के अंत में सभी शिक्षकों ने उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की।

कानपुर विकास प्राधिकरण

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) – सबके लिये आवास

के अन्तर्गत प्राधिकरण की विभिन्न योजनाओं में भवन प्राप्त करने का

अन्तिम अवसर

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अन्तर्गत विभिन्न योजनाओं में रिफण्ड से रिक्त 205 फ्लैटों के आवंटन हेतु दिनांक 27.02.2026 से 02.04.2026 तक एच0डी0एफ0सी0 बैंक के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किये गये थे। जनता की मांग के दृष्टिगत उपरोक्त भवनों के आवंटन हेतु आवेदन करने की तिथि दिनांक 17.04.2026 तक बढ़ायी जाती है।

कानपुर नगर की एच0डी0एफ0सी0 बैंक की किसी भी शाखा में सम्पर्क कर आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन करने की अंतिम तिथि 17.04.2026

(अभय कुमार पाण्डेय)
सचिव

14 x11

किडनी रैकेट पर शिकंजा और कसा

विदेशी कनेक्शन से जांच में आया नया मोड़

देवरिया-नोएडा-एनसीआर तक फैले नेटवर्क की परतें खुलीं, टेलीग्राम चैट और अस्पतालों की भूमिका जांच के घेरे में

स्वराज इंडिया फालोअप

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

कानपुर। कानपुर में उजागर हुए अवैध किडनी ट्रांसप्लांट रैकेट मामले में अब जांच और तेज हो गई है। पुलिस की गिरफ्त में आए आरोपियों से पूछताछ के बाद इस पूरे नेटवर्क के कई नए और चौंकाने वाले पहलू सामने आए हैं। शुरुआती खुलासे के बाद अब यह मामला सिर्फ स्थानीय नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर तक जुड़ा हुआ दिखाई दे रहा है, जिससे एजेंसियां और सतर्क हो गई हैं।

जांच एजेंसियों के अनुसार, गिरोह बेहद संगठित तरीके से काम कर रहा था। गरीब और मजबूर लोगों को पैसों का लालच देकर किडनी डोनर बनाया जाता था, जबकि अमीर मरीजों से मोटी रकम वसूली जाती थी। पूछताछ में सामने आया है कि कई मामलों में डोनर्स को तय रकम भी नहीं दी गई, जिससे विवाद की स्थिति बनी और अंततः इसी दरार ने पूरे रैकेट का पर्दाफाश कर दिया। सबसे अहम खुलासा हाल ही में एक विदेशी महिला के अवैध ट्रांसप्लांट से जुड़ा है।

इस केस ने जांच को नया आयाम दे दिया है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि विदेशी मरीज भारत तक कैसे पहुंचे और इसमें किन-किन एजेंटों और अस्पतालों की भूमिका रही। आशंका है कि यह नेटवर्क मेडिकल टूरिज्म की आड़ में लंबे समय तक सक्रिय था

डिजिटल प्लेटफॉर्म बना रैकेट का 'सुरक्षित ठिकाना'

जांच में यह भी स्पष्ट हुआ है कि आरोपी आधुनिक तकनीक का सहारा लेकर लंबे समय तक पुलिस की नजरों से बचे रहे। टेलीग्राम जैसे एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म के जरिए डीलिंग होती थी, जहां डोनर्स और मरीजों की जानकारी साझा की जाती थी। दलालों की अलग टीम डोनर्स की तलाश करती थी, जबकि डॉक्टरों का नेटवर्क ट्रांसप्लांट को अंजाम देता था। देवरिया, नोएडा और दिल्ली-एनसीआर तक फैले इस नेटवर्क में कई संदिग्ध अस्पतालों और नर्सिंग होम्स की भूमिका भी सामने आ रही है। पुलिस अब इन सभी स्थानों पर लगातार छापेमारी कर रही है।

अंतरराष्ट्रीय एंगल गहराया

- विदेशी महिला के ट्रांसप्लांट से साफ संकेत कि रैकेट सिर्फ स्थानीय नहीं, बल्कि इंटरनेशनल नेटवर्क से जुड़ा हो सकता है।

मेडिकल टूरिज्म की आड़

- शक है कि भारत आने वाले कुछ विदेशी मरीजों को इस अवैध नेटवर्क के जरिए टारगेट किया जाता था।

डिजिटल क्राइम का नया रूप

- टेलीग्राम जैसे एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म के इस्तेमाल ने जांच एजेंसियों के लिए चुनौती बढ़ाई।

डोनर्स का शोषण

- गरीब लोगों को पहले बड़े पैसों का लालच, फिर ऑपरेशन के बाद कम रकम देकर टालना–मानव तस्करी जैसे गंभीर संकेत।

स्वास्थ्य तंत्र पर सवाल

- निजी अस्पतालों और डॉक्टरों की भूमिका ने मेडिकल सिस्टम की निगरानी व्यवस्था की कमजोरी उजागर की।

कानूनी शिकंजा कड़ा

- मानव अंग प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 के तहत आरोपियों को 10 साल तक की सजा और भारी जुर्माना संभव।

लाइसेंस रद्द होने का खतरा

- दोषी पाए जाने पर संबंधित डॉक्टरों का मेडिकल लाइसेंस स्थायी रूप से निरस्त किया जा सकता है।

कई राज्यों में फैला नेटवर्क

- उत्तर प्रदेश के अलावा दिल्ली-एनसीआर और अन्य राज्यों में भी कनेक्शन मिलने की आशंका।

आर्थिक लेनदेन की जांच

- करोड़ों रुपये के ट्रांजैक्शन की पड़ताल, हवाला या फर्जी खातों के इस्तेमाल की भी जांच।

और खुलासों की उम्मीद

- गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ के बाद कई बड़े नाम और अस्पताल सामने आ सकते हैं।

स्वराज इंडिया || कानपुर सिटी || 03

कानपुर किडनी कांडः तीन अस्पतालों पर छापे से खुला अंगों के काले कारोबार का जाल

सपनों की कीमत 'जिस्म' से चुकाई

60 लाख का सौदा, हाथ में चंद लाख, एमबीए छात्र समेत कई युवकों को बनाया शिकार

वार्डबॉय बना रैकेट का मास्टरमाइंड, शहर के तीन बड़े अस्पतालों में रेड से मचा हड़कंप

अस्पतालों की भूमिका कितनी गंभीर?

वार्डबॉय से 'डॉक्टर' बना सरगना

कब-कब पकड़े गए ऐसे रैकेट

क्यों बनते हैं छात्र और गरीब शिकार?

अब क्या करेगा सिस्टम?

अब आगे क्या होगा?

पुलिस इस रैकेट के फरार सरगनाओं और अन्य सहयोगियों की तलाश में कई राज्यों में दबिश दे रही है। साथ ही, संदिग्ध ट्रांजैक्शन और डिजिटल चैट्स को खंगाला जा रहा है, ताकि पूरे नेटवर्क की जड़ तक पहुंचा जा सके। इस सनसनीखेज खुलासे ने न सिर्फ कानपुर, बल्कि पूरे प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब सबकी नजर इस बात पर टिकी है कि जांच एजेंसियां इस संगठित अपराध के कितने बड़े चेहरे बेनकाब कर पाती हैं।

अस्पतालों पर सख्ती, लाइसेंस रद्द करने की हो रही तैयारी

मामले के सामने आने के बाद स्वास्थ्य विभाग भी एक्शन मोड में आ गया है। संयुक्त कार्रवाई में कई अस्पतालों की जांच की गई, जिनमें से एक को सील कर दिया गया है, जबकि अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया गया है। हालांकि, कुछ अस्पतालों के खुले पाए जाने के बाद विभाग की कार्रवाई पर भी सवाल उठे हैं। अधिकारियों का कहना है कि किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा और मेडिकल एथिक्स का उल्लंघन करने वाले डॉक्टरों के लाइसेंस तक रद्द किए जाएंगे।

भ्रष्टाचार से लड़ता एक युवा इंजीनियर अभय सिंह की कहानी बनी मिसाल

जल जीवन मिशन में गुणवत्ता से समझौता न करने पर झेला तबादला और वेतन रोकने जैसी कार्रवाई, अब मामला न्यायालय में

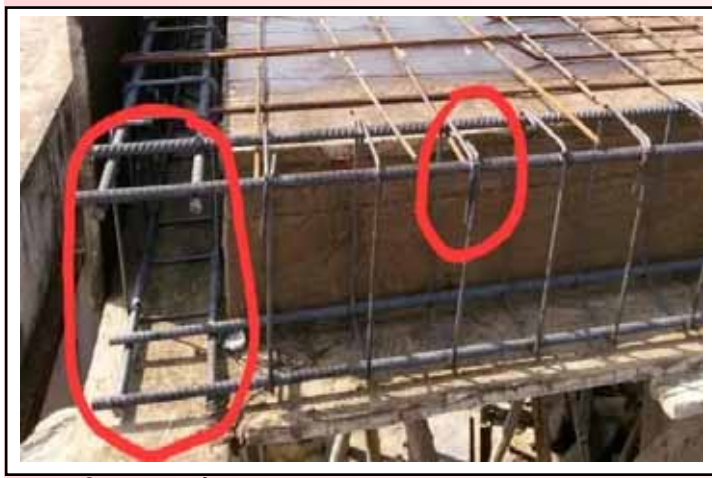

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

मऊ/लखनऊ। देश में जब भी किसी सड़क, नाली, पुल-पुलिया या पानी की टंकी के गिरने की खबर सामने आती है, तो आमतौर पर उंगलियां इंजीनियरों और ठेकेदारों की कार्यप्रणाली पर उठती हैं। घटिया निर्माण, कमीशनखोरी और मिलीभगत जैसे आरोप अक्सर सुर्खियां बनते हैं। लेकिन इसी व्यवस्था के बीच कुछ ऐसे अधिकारी भी हैं, जो ईमानदारी और निष्ठा के साथ सिस्टम से लड़ने का साहस रखते हैं। ऐसी ही एक कहानी उत्तर प्रदेश के नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग में तैनात जूनियर इंजीनियर अभय सिंह की है, जिन्होंने कथित भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाकर एक अलग मिसाल पेश की है।

वर्ष 2022 में विभाग में 200 सहायक अभियंता और 600 अवर अभियंताओं की भर्ती की गई थी। इसी प्रक्रिया में चयनित होकर अभय सिंह की पहली तैनाती मऊ जनपद के कोपागंज विकास खंड में हुई। उन्हें जल जीवन मिशन के अंतर्गत करीब 150 करोड़ रुपये के कार्यों की माप (एमबी) और भुगतान से संबंधित जिम्मेदारी सौंपी गई।

अभय सिंह ने अपने कार्यकाल के दौरान निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया। निरीक्षण के दौरान घटिया सामग्री मिलने पर उसे वापस कराना, मानक के अनुरूप न बनने वाली संरचनाओं को तुड़वाना और दोबारा निर्माण कराना उनकी कार्यशैली का हिस्सा रहा। ग्रामीणों की शिकायतों का

त्वरित समाधान भी उन्होंने प्राथमिकता से किया।

सूत्रों के अनुसार, बड़े भुगतान अधिकार होने के कारण उन्हें कथित रूप से महंगी गाड़ी, जमीन और कमीशन जैसे प्रलोभन भी दिए गए, जिन्हें उन्होंने ठुकरा दिया। इसके बाद उनका स्थानांतरण कोपागंज से रानीपुर ब्लॉक कर दिया गया, जिसे उन्होंने अनुचित बताते हुए उच्च स्तर पर शिकायत की।

नई तैनाती पर भी सख्त रुख दिखाया था

रानीपुर में कार्यभार संभालने के बाद भी अभय सिंह ने निर्माण कार्यों में कमियां पाईं और स्पष्ट निर्देश दिया कि मानकों के अनुरूप कार्य होने पर ही भुगतान किया जाएगा। इस रुख के बाद ठेकेदारों द्वारा उनके खिलाफ शिकायतें किए जाने की बात सामने आई।

विभागीय स्तर पर अभय सिंह पर लापरवाही और अनुशासनहीनता के आरोप लगाए गए। हालांकि निलंबन या सेवा समाप्ति जैसी कार्रवाई नहीं की गई, लेकिन उनका वेतन रोक दिया गया। यह मामला वर्तमान में उच्च न्यायालय में विचाराधीन है।

अनोखे तरीके से उठाई आवाज

23 मार्च 2025, शहीद दिवस के अवसर पर अभय सिंह ने भगत सिंह से प्रेरित होकर अनोखे तरीके से विरोध दर्ज कराया। वे एक पानी की टंकी पर चढ़कर तिरंगा लहराते हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ नारे लगाते नजर आए और दस्तावेज हवा में उछालकर अपनी बात लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। हालांकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में इस घटना को आत्महत्या का प्रयास बताया गया, जिसे उनके समर्थक गलत बताते हैं।

पिछले एक वर्ष में उत्तर प्रदेश के कई जिलों में पानी की टंकियों के गिरने की घटनाएं सामने आई हैं। अभय सिंह का दावा है कि यह निर्माण कार्यों में गुणवत्ता की कमी का परिणाम है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि सुधार नहीं हुआ, तो ऐसी घटनाएं आगे भी हो सकती हैं।

प्रेरणा या विवाद?

अभय सिंह की कहानी जहां एक ओर ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल के रूप में देखी जा रही है, वहीं दूसरी ओर यह मामला विभागीय विवाद और जांच का विषय भी बना हुआ है।

यूपी में मजदूरी बढ़ी, कामगारों को मिला महंगाई का राहत पैकेज

अकुशल से कुशल तक सभी श्रेणियों की सैलरी में इजाफा, 10-14 रुपये रोज बढ़ोतरी

ईंट-भट्ठा, कांच, डेयरी समेत 70 से ज्यादा उद्योगों में लागू की गई नई दरें

स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में संगठित और असंगठित क्षेत्र के लाखों कामगारों के लिए राहत भरी खबर है। बुधवार से श्रम विभाग द्वारा तय नई मजदूरी दरें लागू हो गई हैं, जिससे विभिन्न उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों की आय में इजाफा हुआ है। श्रम विभाग ने महंगाई को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम मजदूरी और परिवर्तनीय महंगाई भत्ते (डीए) में संशोधन किया है। इसके तहत अकुशल, अर्द्ध-कुशल, कुशल और अति कुशल सभी श्रेणियों के कामगारों की मजदूरी में प्रतिदिन करीब 10 से 14 रुपये तक की बढ़ोतरी की

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

गई है।न्यूनतम मजदूरी अधिनियम-1948 के तहत 74 से अधिक उद्योगों जैसे ईंट-भट्ठा, प्लास्टिक, डेयरी, कपड़ा, प्राइवेट अस्पताल, प्रिंटिंग और ताला उद्योग में नई दरें लागू की गई हैं।

अन्य उद्योगों में अकुशल श्रमिकों की मासिक मजदूरी 11,021 रुपये से बढ़ाकर 11,313 रुपये, अर्द्धकुशल की 12,123 से बढ़ाकर 12,445 रुपये और कुशल श्रमिकों की मजदूरी 13,850 से बढ़ाकर 13,940 रुपये कर दी गई है।वहीं, कांच की चूड़ी उद्योग में भी मजदूरी में बढ़ोतरी हुई है।

अकुशल श्रमिकों को अब करीब 10,096 रुपये मासिक और 388 रुपये प्रतिदिन मिलेंगे, जबकि कुशल श्रमिकों की दैनिक मजदूरी लगभग 492 रुपये तय की गई है।

श्रम विभाग हर छह महीने में महंगाई भत्ते की समीक्षा करता है। इस बढ़ोतरी से प्रदेश के लाखों कामगारों को बढ़ती महंगाई के बीच कुछ राहत मिलने की उम्मीद है।

सम्पादकीय

आधुनिक रिश्तों की परिवर्तनशीलता को स्वीकारें

आधुनिकता के संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहे वयस्कों के रिश्तों को लेकर समय-समय पर देश की विभिन्न अदालतों के फैसले सामने आते रहे हैं। उनमें कई विरोधाभास भी नजर आते रहे हैं। इसी तरह इलाहाबाद उच्च न्यायालय के दो हालिया फैसलों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विवाह संस्था के बीच पैदा हुई नाजुक खाई को ही उजागर किया है। जहां एक मामले में, न्यायालय का कहना था कि वयस्कों के बीच आपसी सहमति से बना लिव इन रिलेशनशिप, भले ही एक साथी विवाहित हो, अब अपराध की श्रेणी में नहीं आता। अब भले ही विवाह संस्था के पारंपरिक स्वरूप को मानने वाले इस बात को स्वीकार न करें, लेकिन इससे जुड़े हुए तमाम यक्ष प्रश्न जरूर हमारे सामने हैं। वहीं एक अन्य घटनाक्रम में न्यायालय ने एक ऐसे ही दंपति को संरक्षण देने से इनकार कर दिया। अदालत का कहना था कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर पति या पत्नी के कानूनी अधिकारों को कमजोर करने की इजाजत नहीं दी जा सकती है। यह स्पष्ट विरोधाभास वास्तव में एक गहरी कानूनी रिक्तता को ही प्रतिबिंबित करता है। दरअसल, भारतीय कानून ने संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के हिस्से के रूप में, परंपरागत भारतीय समाज में लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता देने की दिशा में सावधानीपूर्वक ही कदम बढ़ाया है। इसके बावजूद भी, यह विवाह को एक कानूनी रूप से स्वीकृत संस्था के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता देता रहा है। जिसके अंतर्गत वयस्कों के अपने अधिकार और दायित्व भी हैं। निर्विवाद रूप से, जिन्हें आसानी से दरकिनार भी नहीं किया जा सकता है। इस परिणाम के मूल में एक न्यायिक विसंगति भी है। जहां न्यायालय लिव इन रिलेशन को अपराध की श्रेणी से तो बाहर कर देता है, लेकिन उनके परिणामों को वैध ठहराने से हिचकिचाता है। दरअसल, वयस्कों के रिश्तों में यह तनाव सिर्फ कानूनी ही नहीं बल्कि सामाजिक और नैतिक भी है।

निर्विवाद रूप से, आज भारतीय समाज एक बड़े संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहा है। जिसमें भारतीय परंपरागत जीवन मूल्यों तथा तेजी से बदलते रिश्तों के बीच का एक द्वंद्व भी शामिल है। यह एक हकीकत है कि आधुनिक जीवन में रिश्तों में स्वतंत्रता की बयार स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता से परवान चढ़ी है। लेकिन भारत जैसे परंपरावादी समाज में सदियों से विवाह एक अनुबंध होने के साथ-साथ एक गहरी सामाजिक मान्यता भी है। लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारतीय समाज में आधुनिक रिश्तों की वास्तविकता कहीं अधिक परिवर्तनशील भी है। वयस्कों के रिश्तों में व्यक्ति आगे बढ़ता है, कभी-कभी बिना औपचारिक समापन के भी। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि कानून भी मौजूदा परिदृश्य की इस वास्तविकता से अनभिज्ञ नहीं रह सकता। यह भी एक सत्य है कि वयस्कों के रिश्तों को संरक्षण या मान्यता से वंचित करना, ऐसे रिश्तों को समाप्त नहीं करता है। वास्तव में यह केवल उन्हें असुरक्षा और कानूनी अनिश्चितता की ओर धकेल देता है। सही मायनों में आवश्यकता न्यायिक असंगति की नहीं है, बल्कि विधायी स्पष्टता की ही है। वास्तव में एक हकीकत यह भी है कि भारतीय समाज में वैवाहिक अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने वाले एक प्रभावी ढांचे की लंबे समय से आवश्यकता महसूस की जाती रही है। हमें मौजूदा परिदृश्य में यह बात स्वीकार करनी होगी कि यद्यपि विवाह संस्था संरक्षण की हकदार है, फिर भी पुरुष या स्त्री की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अनिश्चित काल तक इसके अधीन बंधक बनाकर नहीं रखा जा सकता है।

विवादों से दूर रह रिश्ते सुधार सकते हैं बालेन

क्षमा रस्तोगी

नेपाल ने लिपुलेख-लिम्पियाधुरा और कालापानी क्षेत्र से संबंधित सवाल सबसे पहले 1991 में भारत के साथ उठाया था। यह मुद्दा उस समय सामने आया जब 1990 में नेपाल में राजशाही से लोकतांत्रिक सरकार में बदलाव हुआ, और नई सरकार नेनेपाल ने लिपुलेख-लिम्पियाधुरा और कालापानी क्षेत्र से संबंधित सवाल सबसे पहले 1991 में भारत के साथ उठाया था। यह मुद्दा उस समय सामने आया जब 1990 में नेपाल में राजशाही से लोकतांत्रिक सरकार में बदलाव हुआ, और नई सरकार ने सुगौली संधि के तहत सीमा निर्धारण पर आपत्तियां जताई थीं।अच्छा हुआ, नेपाल की पूर्व विदेशमंत्री आरजू राणा भारत में नहीं हैं।

वो होतीं, तो शेख़ हसीना जैसा शरण और प्रत्यर्पण वाला इश्यू खड़ा हो जाता। 19 अगस्त, 2024 को जब वो भारत आईं, विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने अपने पर्सनल अकाउंट से ट्वीट किया था, 'नेपाल की डॉ. आरजू राणा देउबा का विदेश मंत्री के तौर पर भारत की अपनी पहली यात्रा पर स्वागत है। हम अपनी बातचीत का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।' आरजू राणा की शख़्सियत ख़ास इसलिए भी है, क्योंकि वो नेपाल में पांच बार प्रधानमंत्री रह चुके शेरबहादुर देउबा की श्रीमती जी हैं। पिछले महीने, जब नेपाल पुलिस की अनुसंधान शाखा, (सीआईबी) और मनी लॉन्ड्रिंग पर नज़र रखने वाले महकमे सम्पत्ति शुद्धीकरण अनुसन्धान विभाग (डीएमएलएआई) के अधिकारी उन्हें तलाश रहे थे, तब आरजू राणा भारत में थीं।ये जो कुछ हो रहा है, उसके पटकथा लेखक, पूर्व उपप्रधानमंत्री व पत्रकार रबि लामिछाने हो सकते हैं। मान्यवर, करोड़ों रुपये के गबन और मनी लॉन्ड्रिंग के गंभीर मामले में जेल में थे। जेन-ज़ी आंदोलन के समय जिन्हें छुड़ाने के क्रम में फायरिंग हुई, और दस क़ैदी मारे गए थे। इस तरह की चर्चा, कि आरएसपी सरकार का मुखिया गबन और मनी लॉन्ड्रिंग मामले का सज़ायाफ्ता रहा है, बालेन्द्र सरकार को असहज कर रही थी। अब यह कह सकते हैं, कि देखो, जो बरसों से सत्ता में रहे हैं, वो भी कोई परमहंस नहीं हैं।बहरहाल, आरजू राणा देउबा को दिल्ली से सिंगापुर, जैसे-तैसे रवाना किया गया। लेकिन, सोमवार को पता चला, कि अब आरजू राणा देउबा हांगकांग में घुटनों के इलाज के लिए गई हैं। यों, नेपाल और हांगकांग के बीच कोई औपचारिक प्रत्यर्पण समझौता नहीं है। चुनांचे, आरजू राणा देउबा ने सुरक्षित ठिकाना ढूंढ़ लिया है। ख़ैर, जो होता है, अच्छे के लिए होता है। भारत पहले से शेख़ हसीना के प्रत्यर्पण वाले कूटनीतिक विवाद में उलझा हुआ था, उसके लिए एक नया बखेड़ा नेपाल से शुरू हो जाता।इस समय नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री ओली और नेपाली कांग्रेस के नेता व पूर्व मंत्री दीपक खड़का की गिरफ्तारी से माहौल गरमाया हुआ है। धनशोधन का आरोप पूर्व प्रधानमंत्री प्रचंड पर भी है। मनी लॉन्ड्रिंग के लांछन से मिस्टर एंड मिसेज देउबा, उनके बेटे जयवीर सिंह देउबा, उनके साले भूषण राणा मुक्त नहीं हैं। ये लोग देश से बाहर हैं। लगता है, देउबा कुनबा चैन की सांस नहीं ले पायेगा। राणा काल से ही भारत, नेपाली नेताओं को राजनीतिक शरण देने के वास्ते सबसे सुरक्षित मुकाम माना जाता है।देउबा विवाद से दिल्ली बच तो गई, लेकिन, यह न मान लें कि मतभेदों से मुक्ति मिल गई। जून, 2026 से 17 हज़ार 500 फीट ऊंचाई वाले दुर्गम लिपुलेख दर्रे के बरास्ते भारत-चीन के बीच व्यापार की शुरुआत होनी है। केपी शर्मा ओली इसका विरोध दर्ज़ कराने पिछले साल पेइचिंग पहुंच गए थे। चीन ने पल्ला झाड़ा, तो कम्युनिस्ट नेता निराश होकर चुप्पी लगा गए। अब नेपाल का नया निज़ाम इसे कैसे हैंडल करता है, यह देखना बाक़ी है। लिपुलेख दर्रे पर नेपाली दावेदारी के वास्ते एक फ़र्ज़ी 'चुच्चे नक्शा' संसद में पास करा लिया गया था। नेपाली में 'चुच्चे' का मतलब 'नुकीला' होता है। लिपुलेख दर्रे की भू-सामरिक स्थिति नुकीली है।उपलब्ध दस्तावेज़ बताते हैं, भारत और चीन के बीच लिपुलेख दर्रे से होकर गुज़रने वाला यह सबसे प्राचीन व्यापार मार्ग है, जो भारत के उत्तराखंड को तिब्बत के तकलाकोट (पुरंग) से जोड़ता है।

फोर्टिफाइड चावल से जुड़े स्वास्थ्य के जोखिम

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 'फोर्टिफाइड' चावल का वितरण अनिवार्य करना सवाल खड़े करता है। कहा गया कि चावल के दानों में कृत्रिम रूप से आयरन और विटामिन मिलाकर देश की बड़ी आबादी को 'छिपी हुई भूख' से मुक्त किया जा सकता है। किंतु, इस योजना के स्वास्थ्य जोखिम अब चर्चा में है।सरकार को अपने उस आदेश को वापस लेना पड़ा, जिसके तहत विभिन्न सार्वजनिक वितरण तंत्र के माध्यम से 'फोर्टिफाइड' चावल के वितरण को अनिवार्य किया गया था। दरअसल, इस बात के कोई प्रमाण नहीं थे कि इस तरह तैयार चावल रक्त-अल्पता यानी एनीमिया से लड़ने में कारगर है।

वहीं आईआईटी खड़गपुर की एक रिपोर्ट में इनके भंडारण को मानव स्वास्थ्य के लिए घातक बताया गया था।भारत में केंद्रीय पूल में चावल का कुल भंडार लगभग 679.32 लाख टन तक पहुंच गया है, जो निर्धारित बफर मानदंड, लगभग 76.1 लाख टन से 9 गुना अधिक है। इसके बावजूद सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 'फोर्टिफाइड' यानी संवर्धित चावल के वितरण को अनिवार्य कर दिया जाना कई सवाल खड़े कर रहा था। देश की सभी सार्वजनिक वितरण दुकानों और आंगनवाड़ी आदि में कोई 350 लाख मीट्रिक टन फोर्टिफाइड चावल के वितरण की व्यवस्था की गई थी। कहा तो यह गया कि चावल के दानों में कृत्रिम रूप से लौह तत्व और विटामिन मिलाकर देश की एक बड़ी आबादी को 'छिपी हुई भूख' से मुक्त किया जा सकता है। किंतु, इस महत्वाकांक्षी योजना के पीछे छिपे स्वास्थ्य जोखिम और निर्माण प्रक्रिया की अनिश्चितता अब गंभीर विमर्श का विषय बन गई है। पायलट प्रोजेक्ट की आड़ में सारे देश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में यह चावल डालने से बड़ी आबादी पर संकट के बादल भी मंडरा रहे हैं।सबसे पहले टूटे हुए चावलों को पीसकर आटा बनाया जाता है। इस आटे में आयरन (लोहा), फोलिक एसिड और विटामिन

बी12 का एक निर्धारित मिश्रण मिलाया जाता है। इसमें जिंक, विटामिन ए, बी1, बी2, बी3 और बी6 भी मिलाए जाते हैं। मिश्रण में पानी मिलाकर इसे एक 'एक्सट्रूडर' मशीन में डालते हैं, जो इसे ठीक चावल के दाने जैसा आकार देती है। इन्हें फोर्टिफाइड राइस कर्नेल कहा जाता है। इन कृत्रिम दानों को सामान्य चावल के साथ 1:100 के अनुपात में मिलाया जाता है।भारतीय चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे चावल सभी के लिए एक समान लाभकारी नहीं हैं। खासकर थैलेसीमिया और सिकल सेल एनीमिया जैसे आनुवंशिक रोगों से पीड़ितों के लिए। ऐसे मरीजों के शरीर में पहले ही आयरन अधिक होता है और आयरन युक्त चावल खाने से उनके अंग खराब होने का खतरा बढ़ सकता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, इन रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के शरीर में आयरन का संचय प्राकृतिक रूप से अधिक होता है। उन्हें बार-बार रक्त चढ़ाना पड़ता है, जिससे उनके शरीर के अंगों पर पहले से ही अतिरिक्त लोहे का दबाव रहता है। यदि ऐसे मरीजों को नियमित लौह-संवर्धित चावल खिलाया जाता है, तो उनके शरीर में 'आयरन ओवरलोड' की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह अतिरिक्त लोहा उनके लीवर, हृदय और गुर्दों को धीरे-धीरे नष्ट कर सकता है।विडंबना यह कि जिन क्षेत्रों में इन बीमारियों का प्रकोप सबसे अधिक है, वहीं सरकारी राशन भोजन का एकमात्र साधन है। पैकेटों पर लिखी बारीक चेतावनी ग्रामीण व निरक्षर आबादी तक पहुंचने में विफल रही, जिससे अनजाने में एक बड़ा वर्ग स्वास्थ्य संकट की ओर धकेला जा रहा है।

शोध बताते हैं कि जब हम सिंथेटिक आयरन यानी कृत्रिम लोहे का अधिक सेवन करते हैं, तो वह पूरे अवशोषित नहीं हो पाता। बचा हुआ लोहा आंतों में ई-कोलाई, आदि हानिकर बैक्टीरिया की वृद्धि में सहायक होता है, जिससे लाभकारी बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। इससे दीर्घकाल में पाचन के गंभीर विकार पैदा हो सकते हैं। शरीर में लोहे की अधिकता 'फ्री रेडिकल्स' पैदा करती है, जिससे कोशिकाओं में 'ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस' बढ़ता है। यह स्थिति समयपूर्व बुढ़ापे, मधुमेह और हृदय रोगों के खतरे बढ़ा सकती है।संवर्धित चावल के निर्माण की तकनीक, जिसे 'एक्सट्रूज़न' कहा जाता है।

उत्तरीपूरा में आग ने उजाड़ा आशियाना, मेहनत की पूंजी राख

दुकान से उठी लपटों ने घर को भी लिया चपेट में, 15 लाख तक का नुकसान

स्वराज इंडिया ब्यूरो

बिल्हौर(कानपुर)। उत्तरीपूरा कस्बे में मंगलवार को लगी आग ने कुछ ही देर में एक परिवार की वर्षों की मेहनत पर पानी फेर दिया। जीटी रोड किनारे स्थित एक दुकान से उठी लपटों ने पास के मकान को भी अपनी चपेट में ले लिया, जिससे अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक आग इतनी तेजी से फैली कि लोगों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। दुकान में रखी बैटरियां, ऑयल और अन्य सामान धू-धू कर जलने लगे, वहीं देखते ही देखते आग बगल के मकान तक पहुंच गई। आसपास के लोगों ने अपने स्तर पर आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन लपटों के आगे प्रयास नाकाफी साबित हुए।

दुकान संचालक मोहम्मद इसरार ने बताया कि जब तक कुछ समझ पाते, आग ने सब कुछ अपनी गिरफ्त में ले लिया। जान बचाना ही पहली प्राथमिकता बन गई। वहीं मकान मालिक अवधेश कुमार ने बताया कि घर में रखा कीमती सामान और उपकरण जलकर नष्ट हो गए, जिससे उन्हें भारी आर्थिक झटका लगा है। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। हालांकि तब तक दुकान और मकान दोनों में काफी नुकसान हो चुका था। शुरुआती अनुमान के मुताबिक, कुल नुकसान लाखों रुपये में बताया जा रहा है। चौकी इंचार्ज अमित कुमार के अनुसार, आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है। वहीं पीड़ित परिवारों ने प्रशासन से आर्थिक मदद की गुहार लगाई है।

खेतों में आग से दो किसानों की गेहूं फसल राख

चौबेपुर/बिल्हौर (कानपुर)। चौबेपुर थाना क्षेत्र के मकान पुरवा गांव में मंगलवार दोपहर अचानक लगी आग ने किसानों को भारी नुकसान पहुंचाया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और दो किसानों की गेहूं की खड़ी फसल जलकर राख हो गई। जानकारी के मुताबिक, गांव निवासी अजय वर्मा के खेत में दोपहर के समय अचानक आग भड़क उठी।

बीड़ी की चिंगारी से आग की आशंका, तेज हवा ने बढ़ाईं लपटें

शुरुआत में आग का कारण स्पष्ट नहीं हो सका, लेकिन तेज हवा के चलते लपटें तेजी से फैल गईं और पास के खेतों को अपनी चपेट में ले लिया। आग हरीशंकर के खेत तक पहुंच गई, जिससे उनकी फसल भी जलने लगी। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए और आग बुझाने में जुट गए। ग्रामीणों ने पास की नहर से पानी लाकर बाल्टियों और पाइप की मदद से करीब एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। हालांकि तब तक करीब दो से तीन बीघा गेहूं की फसल पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी। आग बुझने के बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली और बताया कि समय रहते आग पर नियंत्रण न होता तो नुकसान और भी ज्यादा हो सकता था। प्रारंभिक जांच में आग लगने की वजह राहगीर द्वारा फेंकी गई बीड़ी की चिंगारी मानी जा रही है। घटना के बाद प्रभावित किसानों ने प्रशासन से मुआवजे की मांग की है।

'आधी रोटी खाएंगे, स्कूल पढ़ने जाएंगे' के नारों के साथ बच्चों ने निकाली रैली

स्वराज इंडिया ब्यूरो

- आज से हुई नए सत्र की शुरुआत, बच्चों में दिखा स्कूलों के प्रति उत्साह

बिल्हौर। नए शैक्षणिक सत्र के शानदार आगाज के साथ ही प्राथमिक विद्यालय बिल्हौर प्रथम के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने शिक्षा की अलख जगाने के लिए 'स्कूल चलो रैली' निकाली। सत्र के पहले ही दिन बच्चों के उत्साह ने यह साफ कर दिया कि वे ज्ञान के नए शिखर छूने को तैयार हैं।शिक्षा के प्रति जुनून और गूंजते नारे, हाथों में तख्तियां और चेहरे पर मुस्कान लिए बच्चों ने पूरे क्षेत्र का भ्रमण किया।

रैली के दौरान बच्चों के गगनभेदी नारों ने राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींचा। 'आधी रोटी खाएंगे, स्कूल पढ़ने जाएंगे' और 'मम्मी-पापा हमें पढ़ाओ, स्कूल चलकर नाम लिखाओ' जैसे नारों से पूरा वातावरण शिक्षा के रंग में रंग गया।इस रैली का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र के अभिभावकों को अपने बच्चों का शत-प्रतिशत नामांकन कराने और उन्हें नियमित स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करना था। शिक्षकों ने बताया कि सत्र के पहले दिन इस तरह के आयोजन से बच्चों में स्कूल के प्रति डर खत्म होता है और सीखने का एक सकारात्मक माहौल बनता है।

उज्ज्वल भविष्य की ओर...

रैली पूरी तरह अनुशासित और व्यवस्थित रही।विद्यालय के शिक्षकों ने बच्चों का नेतृत्व किया और ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं व निशुल्क सुविधाओं की जानकारी दी। यह रैली न केवल एक औपचारिकता थी, बल्कि शिक्षा के प्रति उस संकल्प का प्रतीक थी जो हर बच्चे को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने का वादा करता है।

पहले ही दिन बच्चों को मिलीं पुस्तकें

परिषदीय स्कूलों के इतिहास में कई वर्षों बाद सत्र के पहले ही दिन बच्चों को किताबें वितरित कर दी गईं। जिसका संदेश साफ गया कि सरकार शिक्षा के प्रति गंभीर है। वहीं पहले ही दिन पुस्तके पाकर बच्चे उत्साहित नजर आए।

ड्यूटी के दौरान गार्ड की तबीयत बिगड़ी, मौत के बाद फैक्ट्री में हंगामा

स्वराज इंडिया ब्यूरो

- बीमारी के बावजूद ड्यूटी कराने का आरोप
- परिजनों का फैक्ट्री में हंगामा- पुलिस जांच में जुटी

चौबेपुर/बिल्हौर(कानपुर)। देदूपुर गांव स्थित एक कत्था फैक्ट्री में ड्यूटी के दौरान बीमार हुए सिक्योरिटी गार्ड की उपचार के दौरान मौत हो गई। घटना से आक्रोशित परिजनों ने फैक्ट्री प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए शव को फैक्ट्री परिसर में रखकर हंगामा किया।

भगवंतपुर निवासी संदीप बाजपेई उक्त फैक्ट्री में सुरक्षा गार्ड के रूप में कार्यरत थे। रविवार शाम वह नियमित ड्यूटी पर पहुंचे थे, लेकिन देर रात उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई। परिजनों का आरोप है कि उन्होंने मौके पर मौजूद कर्मचारियों को अपनी हालत के बारे में बताया और घर जाने की बात कही, लेकिन स्टाफ ने ड्यूटी का हवाला देते हुए उन्हें जाने नहीं दिया। बताया जा रहा है कि रातभर हालत बिगड़ती रही और सुबह तक संदीप बेहोश हो गए। सूचना मिलने पर परिजन मौके पर पहुंचे और उन्हें तत्काल एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां सोमवार रात इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। मंगलवार को गुस्साए परिजन शव लेकर फैक्ट्री पहुंचे और प्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया। ग्रामीणों ने भी परिवार को आर्थिक सहायता देने और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। थाना प्रभारी दुर्गेश मिश्रा ने पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर हालात को संभाला। उन्होंने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सांड से टकराकर कार पलटी, दो घायल

स्वराज इंडिया ब्यूरो

- शिवराजपुर हाईवे पर हादसा, ग्रामीणों ने उठाई सुरक्षा जाली लगाने की मांग

बिल्हौर/शिवराजपुर (कानपुर)। कानपुर से कन्नौज जा रही एक कार शिवराजपुर थाना थाना क्षेत्र के हाईवे पर सांड से टकराकर पलट गई। हादसे में कार सवार दो लोग घायल हो गए, जिनमें एक की हालत गंभीर बताई जा रही है। सूचना पर पहुंची पुलिस और हाईवे एंबुलेंस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

पुलिस के अनुसार, इंदरगढ़ थाना क्षेत्र के मेढ़ई पुरवा गांव निवासी 46 वर्षीय जितेंद्र कुमार मंगलम अपनी कार से कानपुर से कन्नौज जा रहे थे। शिवराजपुर टोल प्लाजा से करीब डेढ़ किलोमीटर पहले अचानक सड़क पर सांड आ जाने से कार उससे टकरा गई और अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में जितेंद्र कुमार को मामूली चोटें आईं, जबकि ककवन थाना क्षेत्र के बिसधन निवासी 25 वर्षीय सद्दाम हुसैन गंभीर रूप से घायल हो गए। उनकी हालत को देखते हुए कानपुर रेफर किया गया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि हाईवे पर सुरक्षा जाली न होने से छुट्टा गोवंश अक्सर सड़क पर आ जाते हैं, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है। ग्रामीणों ने प्रशासन से इस दिशा में ठोस कदम उठाने की मांग की है। पुलिस ने बताया कि हाईवे पेट्रोलिंग टीम की मदद से सड़क पर पड़े सांड और क्षतिग्रस्त वाहन को हटाकर यातायात बहाल करा दिया गया।

औरैया मेडिकल कॉलेज में एक और बड़ा घोटाला!

आदेशों की अनदेखी, स्टाफ तैनाती में खेल उजागर

कार्यालय मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, पुण्यश्लोका लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय औरैया

दिनांक- 24/12/2025

कार्यालय आदेश

» 36 स्टाफ नर्स होने के बावजूद ट्रामा सेंटर खाली, गोपनीय जांच शुरू

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

औरैया। औरैया मेडिकल कॉलेज में भ्रष्टाचार और नियमों की अनदेखी का एक और मामला सामने आया है। भगवतीपुर ट्रामा सेंटर में स्टाफ नर्सों की तैनाती को लेकर बड़ा खेल उजागर हुआ है, जिससे शासन की मंशा पर सवाल खड़े हो गए हैं।औरैया मेडिकल कॉलेज में सामने आए इस मामले ने स्वास्थ्य व्यवस्था की पारदर्शिता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब देखना होगा कि शासन स्तर पर इस पर क्या कार्रवाई होती है।

10 | अपना प्रदेश | स्वराज इंडिया

औरैया मेडिकल कॉलेज के अधिकारियों की 'दादागिरी'

भगवतीपुर ट्रामा सेंटर के लिए भेजी गई 2 स्टाफ नर्स अब तक रिलीव नहीं

अधिकारियों की मनमानी पर उठे सवाल ?

सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप ट्रामा सेंटर को सुदृढ़ करने के लिए स्टाफ नर्सों की तैनाती के निर्देश दिए गए थे, लेकिन मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने इन आदेशों को दरकिनार कर दिया। बताया जा रहा है कि कुल 36 स्टाफ नर्स तैनात होने के बावजूद उन्हें ट्रामा सेंटर नहीं भेजा गया और अधिकारियों को गुमराह किया जा रहा है। मामले की गोपनीय जांच भी शुरू कर दी गई है।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा स्टाफ नर्स प्रीति सकवार और रजनी वर्मा को ट्रामा सेंटर भेजने के लिए मेडिकल कॉलेज प्रशासन को पत्र भेजा जा चुका है। इसके बावजूद आदेशों का पालन नहीं किया गया। आरोप है कि मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. जसवंत रत्नाकर द्वारा कागजों में दोनों को रिलीव दिखा दिया गया, जबकि वे अब भी अस्पताल में ही कार्यरत हैं।

मामले में मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. मुकेश वीर की भूमिका भी सवालों के घेरे में है। आरोप है कि उनके प्रभाव के चलते नियमों को ताक पर रखकर मनमानी की जा रही है। यहां तक कि जूनियर स्टाफ को सीनियर का दायित्व सौंपा जा रहा है, जो पूरी तरह नियम विरुद्ध है। इससे वरिष्ठ स्टाफ नर्सों में भारी आक्रोश व्याप्त है, लेकिन दबाव और धमकियों के चलते कोई खुलकर सामने नहीं आ रहा।फार्मासिस्टों के कार्य में भी गड़बड़ी सामने आई है। दवा वितरण के बजाय उनसे बाबूगिरी का काम कराया जा रहा है, जो नियमों के विपरीत है। वहीं, आदेशों पर अधिकारहीन अधिकारियों के हस्ताक्षर होने का मामला भी सामने आया है, जिससे पूरे सिस्टम की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैंइस पूरे मामले को लेकर अधिवक्ता विनोद कुमार ने महानिदेशक चिकित्सा शिक्षा, प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य, जिलाधिकारी औरैया व अन्य अधिकारियों को शपथ पत्र के साथ शिकायत भेजकर निष्पक्ष जांच की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो वह उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएंगे।

डॉक्टर गायब, स्टाफ के भरोसे प्रसव लापरवाही ने छीनी दो जिंदगियां !

परमेश्वरी अस्पताल या मौत का दरवाजा?

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

» मां और नवजात की मौत ने खोली निजी अस्पतालों की पोल

» जांच के लिए तीन सदस्यीय टीम गठित की गई: सीएमओ

अयोध्या। अयोध्या के बल्लाहाता स्थित मां परमेश्वरी देवी मेमोरियल हॉस्पिटल में जो हुआ, वह हादसा नहीं–सीधी 'मेडिकल मर्डर' की कहानी लगता है। महताबबाग निवासी सुरेश यादव अपनी पत्नी सोनी यादव को प्रसव पीड़ा में अस्पताल लाए थे। डॉक्टर ने भरोसा दिया सब सामान्य है। लेकिन आधी रात को सच्चाई ने करवट बदली और सिस्टम की पोल खुल गई।आरोप है कि प्रसव के वक्त डॉक्टर नदारद थी, और पूरे मामले को अनुभवहीन स्टाफ के हवाले कर दिया गया।

नतीजा–पहले नवजात को मृत घोषित किया गया, फिर कुछ ही देर में मां ने भी दम तोड़ दिया। सबसे बड़ा सवाल क्या अब

अस्पताल इलाज के लिए नहीं, जोखिम के लिए जाने जाते हैं? क्या यहां जिंदगी नहीं, लापरवाही का सौदा होता है? पीड़ित परिवार ने कोतवाली में तहरीर दी है।

लेकिन असली सवाल अब भी जिंदा है–कितनी मौतों के बाद सिस्टम जागेगा?। अयोध्या सीएमओ का कहना है कि उक्त मामले में तीन सदस्यीय टीम गठित की गई है। जांच रिपोर्ट आते ही दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही के साथ एफआईआर दर्ज कराई जाएगी।

पूर्व विधायक के घर विस्फोट का मामला

इलाज के दौरान पूर्व प्रधान की मौत

घायल भैया लाल चौहान ने कानपुर हैलट में तोड़ा दम, विधायक पुत्र समेत 6 पर पहले से दर्ज है मुकदमा

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

फर्रुखाबाद। जिले में पूर्व विधायक विजय सिंह के आवास पर हुए विस्फोट मामले ने अब और गंभीर मोड़ ले लिया है। इस घटना में गंभीर रूप से घायल पूर्व प्रधान उदय प्रताप उर्फ भैया लाल चौहान की इलाज के दौरान मौत हो गई। उनका उपचार कानपुर के हैलट अस्पताल में चल रहा था, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया।बताया जा रहा है कि विस्फोट की घटना के बाद पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए सपा के पूर्व विधायक के पुत्रों सहित कुल 6 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। इस पूरे प्रकरण में मृतक भैया लाल चौहान को भी आरोपी बनाया गया था, जिससे मामला और जटिल हो गया है।

अपर पुलिस अधीक्षक ने बताया कि मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है और उसके आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि घटना से जुड़े सभी पहलुओं की गंभीरता से जांच की जा रही है, ताकि विस्फोट के कारणों और जिम्मेदार लोगों की स्पष्ट पहचान हो सके।

विस्फोट में घायल अन्य लोगों का इलाज

फिलहाल पुलिस निगरानी में जारी है। सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए अस्पताल में भी विशेष सतर्कता बरती जा रही है। इस घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल है और लोग अब भी इस बात को लेकर चिंतित हैं कि आखिर इतना बड़ा विस्फोट कैसे हुआ। पुलिस टीम तकनीकी और फॉरेंसिक साक्ष्यों के आधार पर जांच को आगे बढ़ा रही है। प्रशासन का कहना है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

तेज आंधी-बारिश से तबाही गेहूं-बेझर की फसल को होगा भारी नुकसान

मूंग-उड़द को मिला जीवनदान, कटी फसलें उड़ने से किसान बेहाल

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। जिले में मंगलवार देर रात आई तेज आंधी और बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। एक ओर जहां इस मौसम ने मूंग और उड़द की फसलों के लिए राहत की बूंदें दी हैं, वहीं दूसरी ओर गेहूं और बेजर की तैयार फसल को भारी नुकसान पहुंचाया है। अचानक बदले मौसम ने किसानों की चिंता कई गुना बढ़ा दी है।

भोगनीपुर तहसील क्षेत्र सहित जिले के कई गांवों में तेज हवाओं के साथ हुई बारिश ने खेतों में कटी पड़ी गेहूं और बेजर की फसल को सबसे ज्यादा प्रभावित किया। खेतों में कटाई के बाद सुखाने के लिए डाली गई फसल तेज हवाओं के चलते उड़ गई या इधर-उधर बिखर गई। इससे किसानों को सीधा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा है। गोपालपुर के पास किसान महेश, छोटू और राजपुर कस्बे के इंदू, गुलाम मोहम्मद, राजेंद्र व राजन ने बताया कि उन्होंने मेहनत से गेहूं की कटाई कर फसल को खेतों में सुखाने के लिए रखा था, लेकिन अचानक आई आंधी ने सब बर्बाद कर दिया। तेज हवा के कारण फसल के ढेर बिखर गए और कई जगहों पर अनाज भी खराब हो गया।

किसानों ने बताया कि जिन खेतों में थ्रेसर से मड़ाई की तैयारी थी, वहां अब काम पूरी तरह रुक गया है। भीगी फसल को दोबारा सूखाने में समय लगेगा, जिससे मजदूरी और लागत दोनों बढ़ेंगी। वहीं, बारिश के कारण जमीन में नमी बढ़ने से कटाई का कार्य भी फिलहाल ठप पड़ गया है। हालांकि, इस बारिश से कुछ किसानों को राहत भी मिली है। जिन किसानों ने मूंग और उड़द की बुवाई की है, उनके लिए यह पानी फायदेमंद साबित हो रहा है। नमी मिलने से इन दलहनी फसलों की बढ़वार बेहतर होने की उम्मीद है, जिससे आने वाले समय में उत्पादन अच्छा मिल सकता है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो मौसम के इस बदले मिजाज ने किसानों के अरमानों पर पानी फेर दिया है। एक ओर जहां रबी की मुख्य फसल गेहूं को नुकसान हुआ है, वहीं किसान अब आसमान की ओर टकटकी लगाए मौसम के स्थिर होने का इंतजार कर रहे हैं, ताकि बची हुई फसल को सुरक्षित किया जा सके। ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों का कहना है कि अगर अगले कुछ दिनों तक मौसम साफ नहीं हुआ, तो नुकसान और बढ़ सकता है। ऐसे में प्रशासन से भी किसानों को राहत दिलाने और नुकसान का आकलन कर मुआवजा देने की मांग तेज होने लगी है।

सरकारी स्कूल में बदली तस्वीर, शिक्षा चौपाल में चमकी बच्चों की प्रतिभा

शिक्षा में गुणवत्ता और संस्कारों के समावेश पर भी जोरदार संदेश दिया गया

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। मलासा विकास खण्ड के संकुल गुरुगांव अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय अकोढ़ी में आयोजित संकुल स्तरीय शिक्षा चौपाल शिक्षा, संस्कार और प्रतिभा का संगम बनकर उभरी। कार्यक्रम में जहां बच्चों की प्रतिभा को मंच मिला, वहीं शिक्षा में गुणवत्ता और संस्कारों के समावेश पर भी जोरदार संदेश दिया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि खण्ड शिक्षा अधिकारी आनन्द भूषण ने दीप प्रज्वलित कर एवं मां सरस्वती के पूजन-अर्चन के साथ किया। विशिष्ट अतिथियों के रूप में एआरपी योगेंद्र त्रिवेदी, अश्वनी कटियार तथा कुलदीप सैनी उपस्थित रहे। नोडल संकुल शिक्षक रजनीश सक्सेना ने सभी अतिथियों का प्रतीक चिन्ह एवं माल्यार्पण कर भव्य स्वागत किया।

कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। यूको क्लब टीम द्वारा पेड़ बचाओ, पृथ्वी बचाओ विषय पर दी गई प्रभावी प्रस्तुति ने पर्यावरण संरक्षण का सशक्त संदेश दिया, जिसकी उपस्थित लोगों ने जमकर सराहना की।

मुख्य अतिथि आनन्द भूषण ने अपने संबोधन में कहा कि ÷शिक्षा तभी सार्थक है जब उसमें संस्कारों का समावेश हो।÷ उन्होंने बच्चों को नियमित विद्यालय आने, अनुशासन बनाए रखने और पूरी लगन से अध्ययन करने की प्रेरणा दी। साथ ही उन्होंने प्रदेश सरकार की योजनाओं–स्मार्ट क्लास एवं निपुण भारत मिशन–का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार हो रहा है और बच्चों को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिल रहा है।

एआरपी योगेंद्र त्रिवेदी ने कहा कि बच्चे देश की मजबूत नींव हैं और उनका उज्ज्वल भविष्य शिक्षकों व अभिभावकों की संयुक्त जिम्मेदारी है। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने की अपील की। वहीं एआरपी अश्वनी कटियार ने कहा कि बच्चे की पहली पाठशाला उसकी मां होती है और शिक्षक उसके भविष्य को दिशा देता है। उन्होंने विश्वास जताया कि परिषदीय विद्यालयों के बच्चे आगे चलकर देश का नाम रोशन करेंगे।

कार्यक्रम में प्राथमिक विद्यालय अकोड़ी की प्रधानाध्यापिका महिमा दोहरे को उत्कृष्ट कार्य के लिए मुख्य अतिथि द्वारा प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। साथ ही एसआईआर जैसे महत्वपूर्ण कार्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए संविलयन विद्यालय बिंदखुरी के शिक्षामित्र एवं शिक्षा मित्र वेलफेयर एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष महेन्द्र पाल को भी सम्मानित किया गया।

गुणवत्ता और नामांकन पर जोर

एआरपी कुलदीप सैनी ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विभागीय गतिविधियों का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन आवश्यक है।

उन्होंने शिक्षक संदर्शिका के उपयोग पर बल देते हुए 3 से 6 वर्ष के बच्चों के शत-प्रतिशत नामांकन के लिए जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा मित्र वेलफेयर एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष महेन्द्र पाल ने किया। अंत में मेधावी छात्रों, खेलकूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले तथा शत-प्रतिशत उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। समापन पर नोडल संकुल शिक्षक रजनीश सक्सेना ने सभी अतिथियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर शिक्षक शैलेंद्र कटियार, धर्मेंद्र सैनी, गुरुप्रसाद, गीता देवी, आलोक श्रीवास्तव, सोमप्रकाश, अजीत कुमार, प्रदीप कुमार, गणेश अवस्थी, ललिता सचान, नीलम श्रीवास्तव, दिशा सचान, प्रियंका मौर्या, बबिता शर्मा, सुनीता श्रीवास्तव, अलका देवी, पृथ्वीराज सहित बड़ी संख्या में शिक्षक-शिक्षिकाएं, अभिभावक एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

भोगनीपुर में 'काली राख' का जहर

भोले बाबा मिल्क फैक्ट्री पर गंभीर आरोप मानकों को किनारे कर फैला रहे प्रदूषण

बच्चों और बुजुर्गों को सांस लेने और आंखों में जलन की शिकायतें बढ़ रही

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। भोगनीपुर तहसील क्षेत्र के छतेनी गांव में स्थित भोले बाबा मिल्क फैक्ट्री इन दिनों गंभीर आरोपों के घेरे में है। फैक्ट्री से निकलने वाली काली राख और जहरीले धुएं ने आसपास के गांवों में रहने वाले लोगों का जीवन मुश्किल कर दिया है। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि फैक्ट्री प्रबंधन पर्यावरण मानकों की खुलेआम अनदेखी कर रहा है और प्रशासनिक अधिकारी सब कुछ जानते हुए भी चुप्पी साधे हुए हैं।

ग्रामीणों ने बताया फैक्ट्री की चिमनियों से लगातार काली राख और धुआं निकलता है, जो हवा के साथ उड़कर घरों तक पहुंच रहा है। हालात यह हैं कि घरों की छतों पर राख की परत जम जाती है। लोग न तो ठीक से कपड़े सुखा पा रहे हैं और न ही खाने-पीने की चीजों को सुरक्षित रख पा रहे हैं। बच्चों और बुजुर्गों को सांस लेने में दिक्कत और आंखों में जलन की शिकायतें बढ़ती जा रही हैं। लोगों का कहना है कि यह राख धीरे-धीरे उनके स्वास्थ्य के लिए जहर साबित हो रही है।

ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया कि फैक्ट्री से निकलने वाली राख को रात के अंधेरे में ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के जरिए बाहर ले जाकर खुले में डंप किया जाता है। इसके लिए कुछ लोगों को ठेका दिया गया है, जो बिना किसी सुरक्षा इंतजाम के राख को इधर-उधर फेंकते हैं। जब यह राख सड़क पर उड़ती है तो राहगीरों, बाइक सवारों और अन्य वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। कई बार यह राख लोगों की आंखों में चली जाती है, जिससे दुर्घटना की आशंका भी बनी रहती है।

मंगलवार को स्थिति उस समय और गंभीर हो गई जब फैक्ट्री परिसर से अचानक काले धुएं का घना गुबार उठने लगा। आसमान में छाए इस धुएं को देखकर ग्रामीणों में हड़कंप मच गया और लोग यह समझकर मौके की ओर दौड़ पड़े कि कहीं फसल में आग न लग गई हो। लेकिन मौके पर पहुंचने पर पता चला कि फैक्ट्री के अंदर जमा कचरा और कबाड़ जलाया जा रहा था, जिससे पूरे क्षेत्र में जहरीला धुआं और तेज बदबू फैल गई।

स्थानीय लोगों का आरोप है कि फैक्ट्री प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की अनिवार्य अनुमति (एनओसी) के बिना संचालित की जा रही है। नियमों के अनुसार औद्योगिक अपशिष्ट को सुरक्षित तरीके से आबादी क्षेत्र से दूर निस्तारित किया जाना चाहिए, लेकिन यहां खुलेआम नियमों की अनदेखी की जा रही है। फैक्ट्री के मेंटेनेंस कर्मचारी गुरुप्रसाद से जब इस संबंध में जानकारी लेने की कोशिश की गई तो उन्होंने किसी भी तरह की टिप्पणी करने से इनकार कर दिया।

लगातार बढ़ते प्रदूषण और प्रशासन की चुप्पी ने अब इस पूरे मामले को और गंभीर बना दिया है। अगर समय रहते इस पर सख्त कार्रवाई नहीं की गई, तो यह समस्या आने वाले समय में बड़े जनस्वास्थ्य संकट का रूप ले सकती है। ग्रामीणों ने मांग की है कि फैक्ट्री की जांच कराई जाए और प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि लोगों को इस 'काली राख' के जहर से राहत मिल सके। इस सम्बन्ध में प्रदूषण विभाग के अधिकारी मनोज चौरसिया से संपर्क किया गया तो उन्होंने अफसरों की बैठक में जाने के बाद बात करने की बात कही है।

भावुक विदाई: स्कूल की यादों में बस गए 'अवधेश सर'

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। विकासखंड मलासा क्षेत्र की ग्राम पंचायत पुलंदर स्थित राजकीय बालिका हाईस्कूल में उस समय माहौल भावुक हो उठा, जब सहायक अध्यापक अवधेश कुमार को विदाई दी गई। यह सिर्फ एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यादगार पलों और भावनाओं से भरा ऐसा समारोह बन गया, जिसे उपस्थित लोग लंबे समय तक नहीं भूल पाएंगे।

विद्यालय परिसर को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए माहौल को जीवंत बना दिया। प्रधानाचार्य शैलेंद्र सचान और शिक्षक रामदास ने अवधेश कुमार के शिक्षण कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि उनका छात्रों के प्रति समर्पण, अनुशासन और स्नेह हमेशा याद रखा जाएगा। इस मौके पर प्रदीप (शिक्षामित्र), पूजा सचान, संस्कृति, अभिषेक मिश्रा, हरि ओम सहित समस्त विद्यालय स्टाफ मौजूद रहा। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि वीके तिवारी ने कहा कि अवधेश कुमार जैसे शिक्षक समाज की अमूल्य धरोहर होते हैं, जो न सिर्फ शिक्षा देते हैं बल्कि जीवन की दिशा भी तय करते हैं। समारोह के अंत में अवधेश कुमार को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। तालियों की गूंज और नम आंखों के बीच दी गई।

नन्हें कदमों में दिखा बड़ा जोश, 'स्कूल चलो अभियान' में गूंजे शिक्षा के गीत

मलासा के संविलियन विद्यालय में बच्चों की रैली और उत्साह ने गांव को किया प्रेरित

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। जनपद में चल रहे 卐स्कूल चलो अभियान卐 के तहत विकास खंड मलासा के संविलियन विद्यालय मलासा में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम बच्चों के उत्साह और उमंग का जीवंत उदाहरण बन गया। कार्यक्रम जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अजय कुमार मिश्र के निर्देशन एवं खंड शिक्षा अधिकारी मलासा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ, जिसमें विद्यालय परिवार के साथ-साथ बच्चों की सक्रिय भागीदारी ने सभी का ध्यान आकर्षित किया।

अभियान के दौरान सबसे खास आकर्षण रहा बच्चों का जोश। नन्हें छात्र-छात्राएं हाथों में तख्तियां लिए, पूरे उत्साह के साथ गांव की गलियों में निकले और सब पढ़ें, सब बढ़ें तथा शिक्षा है अधिकार हमारा जैसे जोशीले नारों से माहौल को ऊर्जा से भर दिया। बच्चों की आवाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता का संदेश साफ झलक रहा था, जिसने ग्रामीणों को भी भावुक और प्रेरित कर दिया।

शिक्षकों के साथ बच्चों ने घर-घर जाकर अभिभावकों से संपर्क किया और अपने साथियों को स्कूल भेजने के लिए आग्रह किया।

इस दौरान बच्चों का आत्मविश्वास और सीखने की ललक देखते ही बन रही थी। उनकी मुस्कान और उत्साह ने अभियान को एक नई ऊंचाई दी। विद्यालय परिसर में आयोजित सभा में भी बच्चों की भागीदारी उल्लेखनीय रही। शिक्षकों ने अभिभावकों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया, वहीं बच्चों ने अपनी उपस्थिति से यह संदेश दिया कि स्कूल ही उनके सपनों की पहली सीढ़ी है।

कार्यक्रम में एआरपी योगेंद्र त्रिपाठी, विपिन विक्रम सिंह, अश्वनी कटियार, कुलदीप सैनी सहित ब्लॉक संसाधन केंद्र और विद्यालय स्टाफ मौजूद रहा। सभी ने मिलकर यह संकल्प लिया कि हर बच्चा स्कूल पहुंचे और शिक्षा की रोशनी से उसका भविष्य उज्ज्वल बने।

जौनपुर में मेडिकल वेस्ट बना खतरा, बढ़ा संक्रमण का डर

निस्तारण की व्यवस्था नदारद, अस्पतालों और सार्वजनिक स्थलों पर फेंका जा रहा खतरनाक कचरा

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

जौनपुर। जौनपुर में मेडिकल वेस्ट प्रबंधन को लेकर गंभीर लापरवाही सामने आ रही है। सरकार द्वारा मेडिकल कचरे के सुरक्षित निस्तारण के लिए कड़े नियम बनाए गए हैं, जिनके तहत इसे न तो खुले में फेंका जा सकता है और न ही जलाया जा सकता है। इसके बावजूद जिले में इन नियमों का पालन नहीं हो रहा है, जिससे संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है।स्थिति यह है कि मेडिकल वेस्ट के निस्तारण के लिए न तो सरकारी स्तर पर कोई ठोस व्यवस्था की गई है और न ही इसके उठान के लिए अलग से वाहन लगाया गया है। परिणामस्वरूप, निजी अस्पताल संचालक नियमों की अनदेखी कर रहे हैं। उनका कहना है कि कचरा उठान के नाम पर उनसे भारी रकम वसूली जाती है, इसलिए वे इस दिशा में उदासीन हैं।

सूत्रों के अनुसार, संबंधित विभागों की मिलीभगत से मेडिकल कचरा खुलेआम कहीं भी फेंका जा रहा है। जनचर्चा के मुताबिक, सरोखना गांव स्थित एक निजी अस्पताल में इस तरह की लापरवाही अधिक देखी जा रही है। वहीं मुंगराबादशाहपुर नगर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के किनारे खून से सनी पट्टियां, रूई और अन्य मेडिकल कचरा खुले में पड़ा दिखाई दे रहा है, जिससे लोगों को दुर्गंध और संक्रमण का खतरा बना हुआ है।प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मुंगराबादशाहपुर में भी मेडिकल कचरा खुले में फेंका जा रहा है। यहां डस्टबिन की व्यवस्था होने के बावजूद नियमित उठान नहीं हो रहा, जिससे परिसर में गंदगी और बदबू बनी रहती है। रोजाना सैकड़ों मरीजों के आने के बावजूद साफ-सफाई को लेकर लापरवाही बरती जा रही है।

भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश सचिव राजनाथ यादव और जिला अध्यक्ष सुनील यादव ने इस मुद्दे पर नाराजगी जताते हुए इसे अधिकारियों की लापरवाही और धन उगाही का माध्यम बताया है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन किया जाएगा। वहीं, पालिका प्रशासन ने सफाई कर्मचारियों द्वारा सामान्य कचरे की तरह उठान करने की बात कही है। पीएचसी अधीक्षक डॉ. राजेश कुमार ने बताया कि नियमित सफाई के लिए पालिका को निर्देश दिए गए हैं और निजी अस्पतालों द्वारा नियमों के उल्लंघन पर जांच कर कार्रवाई की

चित्रगुप्त प्रकटोत्सव पर होगी महाआरती प्रतिभाओं का सम्मान

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

अयोध्या। भगवान चित्रगुप्त जी के प्रकटोत्सव के अवसर पर 2 अप्रैल को सर्किट हाउस सभागार में महाआरती का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम अयोध्या कायस्थ विकास संस्थान के बैनर तले आयोजित होगा, जिसके लिए पदाधिकारी जनसंपर्क में जुटे हैं।प्रवक्ता जेपी श्रीवास्तव के अनुसार, समाज को एकजुट करने के उद्देश्य से यह आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित भी किया जाएगा। संस्थान के अध्यक्ष अरुण श्रीवास्तव ने बताया कि पिछले वर्षों की तरह इस बार भी आयोजन भव्य रूप से होगा, जिससे समाज में एकरूपता और संगठन को मजबूती मिलेगी। इस आयोजन में बड़ी संख्या में समाज के लोगों के शामिल होने की संभावना है।

आंगनबाड़ी नियुक्ति पत्र कार्यक्रम में सदर विधायक बुके फेंक वापस गए

» डीएम, सीडीओ व धौरहरा विधायक की मौजूदगी में नियुक्ति पत्र वितरित किए गए

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखीमपुर खीरी। कलेक्ट्रेट सभागार में सोमवार को आयोजित आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम के दौरान सदर विधायक योगेश वर्मा नाराज हो गए। कार्यक्रम में देरी से पहुंचने के बाद उन्होंने डीपीओ भारत प्रसाद के रवैये पर नाराजगी जताते हुए दिया गया बुके वापस फेंककर कार्यक्रम स्थल से लौट गए।

योगेश वर्मा, सदर विधायक

कलेक्ट्रेट सभागार में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को नियुक्ति पत्र वितरित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें सदर विधायक योगेश वर्मा को भी आमंत्रित किया गया था। बताया जाता है कि सदर विधायक योगेश वर्मा को कार्यक्रम में पहुंचने में थोड़ा विलंब हो गया, इस दौरान वे लगातार डीपीओ भारत प्रसाद को फोन कर रहे थे, लेकिन फोन रिसीव नहीं किया गया। आरोप है कि अधिकारियों ने विधायक का इंतजार किए बिना कार्यक्रम शुरू कर दिया।जब सदर विधायक योगेश कार्यक्रम स्थल पहुंचे तो इस बात पर उन्होंने नाराजगी जताई। विधायक ने डीपीओ पर भी नाराजगी व्यक्त करते हुए स्वागत में दिया गया बुके उन्होंने अस्वीकार करते हुए फेंक दिया और कार्यक्रम से वापस चले गए। विधायक के जाने के बाद डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल, सीडीओ अभिषेक कुमार व धौरहरा विधायक विनोद शंकर अवस्थी की मौजूदगी में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए गए। इस वाक्ये के बाद राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है।गौरतलब है कि हाल के समय में जनप्रतिनिधियों के सम्मान को लेकर ऐसे मामले सामने आते रहे हैं। कुछ दिन पहले कन्नौज में भी एक मंत्री को कार्यक्रम में आमंत्रित किए जाने के बावजूद वहां के डीएम उपस्थित नहीं हुए थे, जिसके बाद मंत्री को डीएम को पत्र लिखना पड़ा था। यह मामला भी प्रदेश की राजनीति में चर्चा का विषय बना रहा।

दुलही में आस्था का दिव्य आलोक

तुलसीदास के हस्तलिखित सुंदरकांड के दर्शन से धन्य होते श्रद्धालु

भोजपत्र पर लिखी अमूल्य धरोहर, सदियों से तिवारी परिवार की श्रद्धा और सेवा से सुरक्षित

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखीमपुर खीरी। तराई की पावन धरती निघासन केवल प्राकृतिक सौंदर्य के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी अद्वितीय धार्मिक विरासत के लिए भी दूर-दूर तक विख्यात है। इसी भूमि के ग्राम दुलही में आज भी एक ऐसी दिव्य धरोहर सुरक्षित है, जो श्रद्धा, विश्वास और इतिहास का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है। यहां महान संत गोस्वामी तुलसीदास द्वारा हस्तलिखित सुंदरकांड भोजपत्र पर संरक्षित है, जिसके दर्शन मात्र से श्रद्धालु स्वयं को धन्य महसूस करते हैं।यह पवित्र ग्रंथ दुलही निवासी पंडित संजय तिवारी के परिवार के पास सुरक्षित है, जो इसे पीढ़ी दर पीढ़ी अत्यंत श्रद्धा और समर्पण के साथ संजोए हुए हैं। मान्यता है कि लगभग दस पीढ़ी पूर्व उनके पूर्वज भवानी शंकर तिवारी को स्वयं तुलसीदास जी ने यह सुंदरकांड प्रसाद स्वरूप प्रदान किया था। तभी से यह धरोहर परिवार की आस्था का केंद्र बनी हुई है।

आस्था और चमत्कार से जुड़ी दिव्य कथा इस पावन विरासत के साथ एक अद्भुत आध्यात्मिक कथा भी जुड़ी है। बताया जाता है कि भवानी शंकर तिवारी प्रतिदिन मां काली के मंदिर में पूजा-अर्चना करते थे। एक दिन जब उनके उच्चारण में त्रुटि हुई, तो समीप स्थित सरोवर से उन्हें दिव्य संकेत प्राप्त हुआ। उस रहस्यमयी आह्वान का अनुसरण करते हुए उन्होंने सरोवर में ध्यानमग्न अवस्था में तुलसीदास जी के साक्षात दर्शन किए। कथा के अनुसार, उनकी भक्ति और निष्ठा से प्रसन्न होकर तुलसीदास जी ने अपने हाथों से लिखा सुंदरकांड उन्हें भेंट किया।

यह क्षण न केवल उनके जीवन का, बल्कि पूरे क्षेत्र के इतिहास का एक अलौकिक अध्याय बन गया।

आस्था का जीवंत केंद्र-आज दुलही गांव में सुरक्षित यह सुंदरकांड केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि श्रद्धा और विश्वास का जीवंत प्रतीक है। दूर-दूर से आने वाले श्रद्धालु यहां पहुंचकर इस पवित्र धरोहर के दर्शन करते हैं और अपने जीवन में सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना करते हैं। तिवारी परिवार की अथक सेवा और समर्पण के कारण यह अमूल्य विरासत आज भी सुरक्षित है, जो आने वाली पीढ़ियों को सनातन संस्कृति और भक्ति की अमिट ज्योति से आलोकित करती रहेगी।

नगर निगम में 'मंटू मॉडल' का महाखेल

पंद्रह हजार वेतन, दस करोड़ का 'परचम'

आउटसोर्सिंग की आड़ में साम्राज्य, टेंडर-ट्रांसफर से तैयार हुआ 'करोड़पति कर्मचारी'

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। यह कहानी किसी फिल्म की स्क्रिप्ट नहीं, बल्कि उस सिस्टम की हकीकत है जहां पंद्रह हजार की नौकरी करने वाला नगर निगम कर्मचारी कुछ ही सालों में करोड़ों का मालिक बन बैठता है और सिस्टम उसे देखता रहता है, जैसे सब कुछ 'नियमों' के दायरे में हो। नगर निगम का एक आउटसोर्सिंग कर्मचारी नाम अखिलेश त्रिपाठी उर्फ मंटू इन दिनों फाइलों से ज्यादा फुसफुसाहटों में दर्ज है। कुछ समाजिक संगठनों और समाजसेवियों का आरोप है कि सालाना दो लाख की आमदनी वाला यह शख्स छह साल में दस करोड़ का साम्राज्य कैसे खड़ा कर देता है। मंदिर के आसपास होटल, ठेकों में दखल, और ट्रांसफर की 'रहस्यमयी वापसी' यह

सब महज इत्तेफाक है या किसी बड़े खेल की पटकथा?

सूत्रों कहना है कि टेंडर सिर्फ कागजों पर निकलते हैं, असली बोली कहीं और लगती है। जलकल से निर्माण तक, हर फाइल की अपनी 'कीमत' तय है। और इस कीमत का हिसाब वेतन पर्ची से नहीं, 'सेटिंग' से लगाया जाता है।

सबसे दिलचस्प है ट्रांसफर का खेल– जहां शिकायत के बाद हटाया जाता है, फिर कुछ ही समय में उसी कुर्सी पर वापसी हो जाती है। जैसे सिस्टम कह रहा हो ÷तुम खेलते रहो, हम देखते रहेंगे।÷ यहां सवाल सिर्फ मंटू का नहीं है, सवाल उस 'मशीन' का है जो ऐसे मंटू पैदा करती है।

अब देखना यह है कि जांच होती है या फिर यह फाइल भी उसी अलमारी में रख दी जाएगी, जहां सच अक्सर धूल खाता है।

होटल मेरे भाई के नाम पर

हालांकि अखिलेश का कहना है कि उपरोक्त सभी आरोप निराधार है । जिस 10 करोड़ के होटल की बात का मुझ पर आरोप लग रहा है वह मेरा नही मेरे भाई के नाम पर है। मेरी भाभी सरकारी शिक्षिका है भाई व भैया ने से उसे अपनी निजी कमाई से बनवाया है।उससे हमारा कोई लेना देना नही है। जबकि उक्त मामले पर निगम का कोई भी अधिकारी कुछ बोलने को तैयार नही है।

अयोध्या | **स्थापना दिवस पर भाजपा का शक्ति प्रदर्शन**

बूथ तक पहुंचेगा संगठन 10 दिन चलेंगे कार्यक्रम

» ध्वजारोहण से लाभार्थी संपर्क तक संगठन को जमीन पर मजबूत करने की रणनीति

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। भारतीय जनता पार्टी 6 अप्रैल को अपना स्थापना दिवस इस बार वृहद स्तर पर मनाने जा रही है। इसे लेकर सहादतगंज स्थित पार्टी कार्यालय में बैठक आयोजित कर 6 से 15 अप्रैल तक चलने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई।क्षेत्रीय महामंत्री विजय प्रताप सिंह ने बताया कि 5 अप्रैल को स्वच्छता अभियान और 6 अप्रैल को ध्वजारोहण किया जाएगा। इस दिन जनप्रतिनिधि व कार्यकर्ता अपने घरों पर भी पार्टी ध्वज लगाकर उत्सव मनाएंगे। साथ ही संगोष्ठियों के जरिए पार्टी की विचारधारा और विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा।

महानगर अध्यक्ष कमलेश श्रीवास्तव ने जानकारी दी कि 7 से 12 अप्रैल तक स्वच्छता अभियान, वरिष्ठ कार्यकर्ता सम्मान और लाभार्थी संपर्क अभियान चलाया जाएगा। कार्यक्रमों को बूथ स्तर तक ले जाकर अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया कि सभी कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार सोशल मीडिया के माध्यम से किया जाए। इस दौरान कई प्रमुख पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

वार्षिक समारोह में मेधावियों ने बिखेरा जलवा

भवदीय पब्लिक स्कूल में वार्षिक पुरस्कार समारोह का आयोजन

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। भवदीय पब्लिक स्कूल में वार्षिक पुरस्कार समारोह का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें सत्र 2025-26 की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के पूजन व दीप प्रज्वलन से हुई। उप प्रमुख छात्र दिव्यांश पाण्डेय ने स्वागत भाषण दिया।

विद्यालय अध्यक्ष इंजी. पी.एन. वर्मा ने शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए समर्पण से कार्य करने का आह्वान किया। कक्षा 6 से 8 तथा 9 व 10 के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

समारोह में ÷बटोहिया गीत÷ पर समूह गान और लोक-नृत्य ने समां बांध दिया। 100त्न उपस्थिति, शैक्षणिक उत्कृष्टता, नेतृत्व, कलात्मक व अन्य श्रेणियों में पुरस्कार वितरित किए गए। अंत में प्रबंधक डॉ. अवधेश वर्मा ने कहा, विद्यालय की यह उपलब्धि शिक्षकों और विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है। इसी समर्पण के साथ आगे बढ़ते हुए हम शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और विद्यालय गीत के साथ हुआ, जो सभी के लिए प्रेरणादायक रहा।

अयोध्या में अतिक्रमण के खिलाफ अभियान शुरू

चौक से फतेहगंज तक सड़क पर कब्जा हटाया, ट्रैफिक सुधार के लिए प्रशासन अलर्ट

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। रामनगरी में बढ़ते जाम से निजात दिलाने के लिए प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। एसपी ट्रैफिक एपी सिंह और एसपी सिटी चक्रपाणि त्रिपाठी के नेतृत्व में पुलिस और नगर निगम की संयुक्त टीम ने चौक से फतेहगंज तक मुख्य मार्ग पर कार्रवाई की।

अभियान के दौरान दुकानदारों द्वारा सड़क पर रखे सामान को जब्त किया गया, जबकि दुकानों के सामने खड़ी गाड़ियों का चालान काटा गया। अवैध रूप से संचालित ई-रिक्शा पर भी जल्द कार्रवाई की तैयारी है। सीओ सिटी श्रीयश त्रिपाठी, नगर कोतवाल अश्वनी पांडे और नगर निगम की टीम मौके पर मौजूद रही। अधिकारियों के अनुसार रोस्टर बनाकर नियमित अभियान चलाया जाएगा और व्यापार मंडल के साथ मिलकर स्थायी समाधान निकाला जाएगा। राम मंदिर के बाद बढ़े श्रद्धालुओं और वाहनों के दबाव को देखते हुए यह कार्रवाई ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने की दिशा में अहम कदम मानी जा रही है।

ट्रंप का आज राष्ट्र को संबोधन, ईरान टकराव पर दुनिया की टिकी सांसें

बारूद के ढेर पर दुनिया!

बदलते बयानों, सैन्य तैनाती और ईरान की धमकियों के बीच अमेरिका निर्णायक मोड़ पर, वैश्विक कंपनियों और खाड़ी क्षेत्र में बढ़ा खतरा

स्वराज इंडिया न्यूज डेस्क

नई दिल्ली। अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के बीच आज का दिन बेहद निर्णायक साबित हो सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप बुधवार रात राष्ट्र को संबोधित करने जा रहे हैं, जिसमें ईरान को लेकर बड़ा फैसला सामने आ सकता है। व्हाइट हाउस की ओर से इस संबोधन की पुष्टि की गई है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि अमेरिका युद्ध समाप्त करने की दिशा में आगे बढ़ेगा या फिर सैन्य कार्रवाई को और तेज करेगा।

व्हाइट हाउस प्रेस सचिव कारोलिन लीवेट के मुताबिक, यह संबोधन रात 9 बजे (भारतीय समयानुसार) होगा। ऐसे समय में यह घोषणा बेहद अहम मानी जा रही है, जब हाल के हफ्तों में ट्रंप ने कभी युद्ध से बाहर निकलने के संकेत दिए, तो कभी हजारों अमेरिकी मरीन्स की तैनाती की खबरें सामने आईं। दरअसल, ट्रंप के लगातार बदलते रुख ने अमेरिकी नीति को लेकर असमंजस पैदा कर दिया है। कभी नाटो सहयोगियों से समर्थन की अपील, फिर उसी से इनकार, तेहरान के ऊर्जा ठिकानों पर हमले की धमकी और फिर अचानक संयम इन सबने रणनीति को उलझा दिया है। एक हालिया सर्वे में 61 प्रतिशत अमेरिकी नागरिकों ने इस नीति पर असहमति जताई है, जो घरेलू दबाव को भी दर्शाता है।

उधर, इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने स्पष्ट कर दिया है कि ईरान के खिलाफ अभियान अभी खत्म नहीं हुआ है और इसे जारी रखा जाएगा। इससे यह संकेत मिलता है कि अमेरिका चाहे जो रुख अपनाए, क्षेत्रीय तनाव कम होने के आसार फिलहाल कम हैं। दूसरी ओर ईरान ने भी सख्त चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि उसके क्षेत्र में किसी भी शीर्ष व्यक्ति की हत्या होती है, तो वह पश्चिम एशिया में सक्रिय कई अंतरराष्ट्रीय कंपनियों को निशाना बनाएगा। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) ने दावा किया है कि ये कंपनियां ईरान विरोधी साजिश का हिस्सा हैं।

तनाव के इस दौर में अमेरिका ने भी अपनी सैन्य तैयारी तेज कर दी है। वॉशिंगटन के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, अमेरिकी सेना पूरी तरह अलर्ट मोड में है और किसी भी बैलिस्टिक मिसाइल या ड्रोन हमले को नाकाम करने में सक्षम है। उनका दावा है कि हाल के दिनों में ऐसे हमलों में 90 प्रतिशत तक कमी आई है, जो रक्षा क्षमता में सुधार को दर्शाता है।

ईरान ने जिन कंपनियों को निशाने पर रखा है, उनमें गूगल, मेटा, एपल, माइक्रोसॉफ्ट, इन्टेल और टेस्ला जैसी वैश्विक दिग्गज शामिल हैं। इससे न सिर्फ साइबर और भौतिक हमलों का खतरा बढ़ा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ने की आशंका है। हालांकि, इस तनाव के बीच कूटनीतिक संकेत भी सामने आए हैं। अमेरिकी सीनेटर मॉर्को रुबियो ने कहा है कि इस संघर्ष की "फिनिश लाइन" दिखाई देने लगी है और बातचीत के जरिए समाधान की कोशिशें जारी हैं। वहीं, ट्रंप ने भी संकेत दिए हैं कि अमेरिका अगले दो-तीन हफ्तों में सैन्य अभियान समेट सकता है। खाड़ी क्षेत्र में भी हलचल तेज हो गई है। खासकर स्ट्रेट आफ होर्मूज को लेकर तनाव बढ़ा है, जहां से दुनिया के बड़े हिस्से का तेल परिवहन होता है। संयुक्त अरब अमीरात की संभावित मध्यस्थता की खबरें भी सामने आ रही हैं, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। कुल मिलाकर, अमेरिका-ईरान टकराव अब ऐसे मोड़ पर पहुंच चुका है जहां एक फैसला न सिर्फ पश्चिम एशिया बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था, ऊर्जा आपूर्ति और सुरक्षा संतुलन को प्रभावित कर सकता है। अब सबकी निगाहें ट्रंप के संबोधन पर टिकी हैं।

- ट्रंप का आज राष्ट्र के नाम संबोधन, ईरान पर बड़ा फैसला संभव
- अमेरिका में 61% लोग ट्रंप की रणनीति से असहमत
- ईरान ने 18 वैश्विक कंपनियों को निशाना बनाने की चेतावनी दी
- अमेरिकी सेना हाई अलर्ट पर, ड्रोन-मिसाइल हमलों से निपटने की तैयारी
- खाड़ी क्षेत्र और होर्मुज जलडमरूमध्य में बढ़ा तनाव
- कूटनीतिक समाधान के संकेत भी समानांतर जारी

ट्रंप की रणनीति, दबाव या दुविधा?

ट्रंप का रुख लगातार बदलता नजर आ रहा है। एक तरफ वे सैन्य ताकत का प्रदर्शन कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जल्द वापसी के संकेत दे रहे हैं। इसे फ्प्रेशर डिप्लोमेसीफ्र माना जा रहा है, लेकिन इससे अमेरिका की स्पष्ट नीति पर सवाल भी उठ रहे हैं।

ईरान की कॉर्पोरेट वार नई जंग का संकेत

ईरान द्वारा बहुराष्ट्रीय कंपनियों को निशाना बनाने की धमकी पारंपरिक युद्ध से अलग फ्हाइब्रिड वॉरफेयरफ्र की ओर इशारा करती है। इसमें साइबर हमले, सप्लाई चेन बाधित करना और आर्थिक नुकसान पहुंचाना शामिल हो सकता है।

तेल, बाजार और सुरक्षा पर खतरा

होर्मुज जलडमरूमध्य में तनाव बढ़ने से कच्चे तेल की आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। इससे वैश्विक बाजारों में उथल-पुथल, महंगाई में वृद्धि और ऊर्जा संकट गहरा सकता है। साथ ही, मध्य-पूर्व में अस्थिरता से अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा समीकरण भी बदल सकते हैं।

प्रयागराज में नकली नोट छापने वाली हाईटेक फैक्ट्री का खुलासा, 4 गिरफ्तार

स्वराज इंडिया ब्यूरो

प्रयागराज। संगम नगरी में नकली नोटों के संगठित गिरोह का बड़ा खुलासा हुआ है, जहां पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार शातिर आरोपियों को गिरफ्तार कर 'काले नोटों' के खेल का पर्दाफाश किया है। गंगानगर पुलिस, एसओजी और सर्विलांस टीम की संयुक्त छापेमारी में आरोपियों के पास से 1,18,300 रुपये के जाली नोट, एक कार, एक बाइक और नोट छापने का पूरा हाईटेक सेटअप बरामद किया गया है।

डीसीपी कुलदीप सिंह गुनावत के मुताबिक, सरायइनायत थाना क्षेत्र के हबूसा मोड़ के पास सोमवार रात घेराबंदी कर इन आरोपियों को दबोचा गया। पकड़े गए आरोपियों में भदोही और देवरिया के युवक शामिल हैं, जो लंबे समय से 500 और 100 रुपये के नकली नोट बाजार में खपा रहे थे।

- जिला पंचायत चुनाव लड़ चुका है गैंग का सरगना, पुलिस कर रही तलाश
- लैपटॉप-प्रिंटर से छप रहे थे जाली नोट, 1.18 लाख की करेंसी, उपकरण बरामद

पुलिस की पूछताछ में सामने आया कि यह गिरोह बेहद सुनियोजित तरीके से काम कर रहा था। देवरिया में किराए के एक कमरे को 'मिनी प्रिंटिंग प्रेस' बना रखा था, जहां लैपटॉप, कलर प्रिंटर और विशेष किस्म के पेपर की मदद से नकली नोट तैयार किए जाते थे। इन नोटों को 40 से 50 प्रतिशत कमीशन पर आसपास के जिलों में सप्लाई किया जाता था, जिससे गिरोह मोटा मुनाफा कमा रहा था।

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

वाराणसी तक फैली गैंग की जड़ें

जांच में यह भी सामने आया है कि गिरोह का नेटवर्क प्रयागराज से बाहर वाराणसी समेत कई जिलों तक फैला हुआ था। स्थानीय बाजारों और ग्रामीण इलाकों में इन नकली नोटों को खपाया जा रहा था, जिससे आम लोगों के साथ-साथ व्यापारियों को भी भारी नुकसान हो रहा था। इस बड़ी कार्रवाई के लिए पुलिस टीम को 15 हजार रुपये के इनाम की घोषणा की गई है। फिलहाल पुलिस पूरे नेटवर्क की कड़ियां जोड़ने में जुटी है और अन्य संदिग्धों की तलाश में छापेमारी जारी है। यह खुलासा न सिर्फ पुलिस की सतर्कता को दर्शाता है, बल्कि यह भी साबित करता है कि अपराधी अब तकनीक का सहारा लेकर संगठित तरीके से आर्थिक अपराधों को अंजाम दे रहे हैं।

सरगना का 'राजनीतिक कनेक्शन'

इस पूरे नेटवर्क का मास्टरमाइंड विवेक यादव बताया जा रहा है, जो जिला पंचायत चुनाव भी लड़ चुका है। फिलहाल वह फरार है और पुलिस उसकी तलाश में लगातार दबिश दे रही है। पुलिस का मानना है कि उसके पकड़े जाने के बाद इस गिरोह के और बड़े राज खुल सकते हैं।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **सपना देवी** द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। **संपादक: अनूप कुमार** **RNI No.:** UPHIN/2023/86769 ❍ **Email:** swarajindia2023@gmail.com ❍ Mob: 7800009853, ❍ **Website:** www.swarajindianews.com ❍ (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे) **प्रधान संपादक: पुरुषोत्तम द्विवेदी**

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com